PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

काल

- क्रिया के जिस रुप से किसी कार्य करने या होने के समय का बोध होता है, उसे 'काल' कहते हैं। (जबकि क्रिया में समय की उपस्थिति आवश्यक नहीं)

  काल के तीन भेद होते हैं-

  1. वर्तमान काल
  2. भूतकाल
  3. भविष्यत् काल

1. वर्तमान काल

- क्रिया के जिस रुप से कार्य के वर्तमान समय में सम्पन्न होने का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

  जैसे-

  1. मैं विद्यालय जाता हूँ।
  2. रोहन खा रहा है।
  3. माँ पूजा कर रही है।

वर्तमान काल के 5 भेद होते हैं।

1. सामान्य वर्तमान
2. तात्कालिक वर्तमान
3. पूर्ण वर्तमान
4. संदिग्ध वर्तमान
5. संभाव्य वर्तमान

1. **सामान्य वर्तमान-** क्रिया का वह रुप जिससे क्रिया का वर्तमान में होना पाया जाए, सामान्य वर्तमान कहलाता है।

   जैसे-

   1. किरन पढ़ती है।
   2. बच्चे खेलते हैं।
   3. सूर्य पूर्व में निकलता है।
   4. लिखित भाषा में हम अपने विचार लिखकर प्रकट करते हैं।
   5. वह दुनिया को नई राह दिखाता है।

2. **तात्कालिक वर्तमान-** क्रिया के जिस रुप से कार्य के होने या करने की निरन्तरता(अर्थात् अभी काम चल रहा हो) का बोध हो, उसे तात्कालिक वर्तमान काल कहते हैं।

   जैसे-

   1. मैं चल रहा हूँ।
   2. आंचल खा रही है।
   3. वह जा रहा है।

3. **पूर्ण वर्तमान-** क्रिया के जिस रुप से कार्य के वर्तमान में पूर्ण होने की जानकारी प्राप्त होती हो, उसे पूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।

   जैसे-

   1. बच्चे आए हैं।
   2. अमृता ने पढ़ा है।
   3. वह आया है।

4. **संदिग्ध वर्तमान** - क्रिया के जिस रुप से क्रिया के होने में संदेह प्रकट हो किन्तु वह कार्य वर्तमान में हो रहा हो तो उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं।

   जैसे-

   1. गगन खाता होगा।
   2. संजय पढ़ता होगा।
   3. माँ खाना बना रही होगी।
   4. बच्चे स्कूल जा रहे होंगे।
   5. वह खाता होगा।

5. **संभाव्य वर्तमान** - संभाव्य का अर्थ होता है- संभावित अर्थात क्रिया के जिस रुप से यह पता चले कि कार्य के वर्तमान काल में पूरा होने की संभावना है तो उसे संभाव्य वर्तमान कहते हैं।

   जैसे-

   1. प्रिया ने खाया हो।
   2. वह आया हो।
   3. फरहीन पढ़ती हो।
   4. लगता है वह रो रही है।
   5. शायद राम आया हो।

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

2. भूतकाल

- क्रिया के जिस रुप से कार्य के बीते हुए समय (अतीत) में सम्पन्न (पूर्ण) होने का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं।

जैसे-

1. कल बारिश हुई थी
2. संगम आया था।
3. वह खा चुका था।

भूतकाल के 6 भेद होते हैं।

1. सामान्य भूत
2. आसन्न भूत
3. पूर्ण भूत
4. अपूर्ण भूत
5. संदिग्ध भूत
6. हेतुहेतुमद् भूत

1. **सामान्य भूत-** क्रिया के जिस रुप से कार्य के बीते हुए समय में सम्पन्न होने का बोध हो, किन्तु ठीक समय का बोध न हो तो उसे सामान्य भूत कहते हैं।

जैसे-

1. बच्चा गया।
2. अजय गया।
3. लड़के आये।
4. सीता ने पत्र लिखा।
5. वर्षा हुई।

2. **आसन्न भूत-** क्रिया के जिस रुप से यह ज्ञात हो कि क्रिया अभी-अभी पूर्ण या समाप्त हुई है, उसे आसन्न भूत कहते हैं।

जैसे-

1. गाड़ी आयी है।
2. अजीत ने पत्र लिखा है।
3. अवनीश अभी आया है।
4. मैंने आम खा लिया है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

3. **पूर्ण भूत-** क्रिया के जिस रुप से यह स्पष्ट ज्ञात हो कि कार्य को समाप्त हुए बहुत समय बीत चुका है, उसे पूर्ण भूत कहते हैं।
   जैसे-
   1. गाड़ी आयी थी।
   2. वर्षा हुई थी।
   3. बच्चा आया था।
   4. छात्र स्कूल गए थे।
4. **अपूर्ण भूत-** क्रिया के जिस रुप से कार्य का बीते समय में होने का बोध हो किन्तु उसकी समाप्ती की पूर्ण जानकारी न हो, उसे अपूर्ण भूत कहते हैं।
   जैसे-
   1. लड़के आ रहे थे।
   2. दीपक पत्र लिख रहा था।
   3. वह पढ़ रहा था।
   4. वह घूम रहा था।

5. **संदिग्ध भूत-** क्रिया के जिस रुप से कार्य होने में अनिश्चितता अथवा संदेह बना हो, उसे संदिग्ध भूत कहते हैं। इसमें यह संदेह बना रहता है कि कार्य भूतकाल में पूरा हुआ या नहीं।
   जैसे-
   1. बच्चा आया होगा।
   2. अभिषेक ने गाया होगा।
   3. उसने कहानी पढ़ी होगी।
   4. ऋषि ने पत्र लिखा होगा।
   5. बस छूट गयी होगी।

- संदिग्ध भूत और संभाव्य वर्तमान के कुछ अन्य पक्ष इस प्रकार से है-
  संदिग्ध भूत- देखा गया होगा, देखी गई होगी, देखे गए होंगे आदि।
  संभाव्य वर्तमान- देखा गया हो, देखी गई हो, देखे गए हो आदि।

6. **हेतुहेतुमद् भूत-** (हेतु का अर्थ है- कारण) जब एक क्रिया के होने या न होने पर दूसरी क्रिया का होना या न होना निर्भर करता हो तो उसे हेतुहेतुमद् भूत कहते हैं।

- इससे यह पता चलता है कि क्रिया भूतकाल में होने वाली थी, लेकिन किसी कारण वश न हो सकी।

  जैसे-

  1. यदि तुमने मेहनत की होती, तो पास हो जाते।
  2. यदि वर्षा होती, तो फसल अच्छी होती।
  3. यदि वह आता, तो मैं जाता। (वह आये तो मैं जाऊ - हेतुहेतुमद् भविष्य)
  4. यदि शिवम ने पत्र लिखा होता, तो मैं अवश्य आता।

3. भविष्यत् काल

- क्रिया के जिस रुप से यह पता चले कि कार्य आने वाले समय (भविष्य) में होने वाला है, तो उसे भविष्यत् काल कहते हैं।

  जैसे-

  1. वह कल जाएगा।
  2. वह कल आएगा।
  3. मैं खाना खाऊँगा।
  4. कल तापमान अधिक होगा।

भविष्यत् काल के 3 भेद होते हैं-

1. सामान्य भविष्यकाल
2. संभाव्य भविष्यकाल
3. हेतुहेतुमद् भविष्यकाल

1. **सामान्य भविष्यकाल-** क्रिया के जिस रुप से यह पता चले कि क्रिया सामान्यतः भविष्य में होने वाली है तो, उसे सामान्य भविष्यकाल कहते हैं।

   जैसे-

   1. आज वर्षा होगी।
   2. प्रेरणा स्टूडियो जाएगी।
   3. शिवम कल दिल्ली जाएगा।
   4. प्रधानमंत्री बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करेंगे।

2. **संभाव्य भविष्यकाल-** क्रिया के जिस रुप से कार्य के भविष्य में होने की संभावना हो, उसे संभाव्य भविष्यकाल कहते हैं।

जैसे-

1. कदाचित शाम तक वो वापस आ जाए।
2. शायद चोर पकड़ा जाए।
3. कल शायद परीक्षा परिणाम घोषित हो।
4. कदाचित संध्या को पानी बरसे।

3. **हेतुहमद भविष्यकाल** - क्रिया के जिस रुप से किसी कार्य का पूरा होना, किसी दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करे, उसे हेतुहेतुमद भविष्यकाल कहते हैं।

जैसे-

1. वह आए तो मैं जाऊ। (वह आता तो मैं जाता - हेतुहेतुमद् भूतकाल)
2. वह कमायें तो मैं खाऊ।
3. वह पढ़ेगा तो सफल होगा।

काल के अन्य भेदों के कुछ रूप (उदाहरण) नीचे दिए जा रहे हैं-

- **संदिग्ध वर्तमान-** देखा जाता होगा, देखी जाती होगी, देखे जाते होंगे।
- **संभाव्य वर्तमान-** देखा जाता हो, देखी जाती हो, देखे जाते हों।
- **आसन्न भूत** - देखा गया है, देखी गई हैं, देखे गए हैं।
- **पूर्ण भूत-** देखा गया था, देखी गई थीं, देखे गए थे।
- **संभाव्य भूत-** देखा गया हो, देखी गई हों, देखे गए हों।
- **संदिग्ध भूत**- देखा गया होगा, देखी गई होंगी, देखे गए होंगे।
- **संभाव्य भविष्यत** - देखा जाऊँगा, देखी जाऊँगी, देखे जाएंगे।